विश्व न्याय मन्दिर

29 दिसम्बर 2015

सलाहकारों के महाद्वीपीय मण्डलों के सम्मेलन को सम्बोधित

परम प्रिय मित्रों,

1. वह योजना जिस पर बहाई विश्व ने लगभग पाँच वर्ष पूर्व प्रयाण किया था अपने अंतिम चरणों में है; इसकी प्राप्तियों की अंतिम गणना अभी भी बढ़ रही है, किन्तु जल्द ही इस पर मुहर लगा दी जायेगी। इसके द्वारा प्रोत्साहित सामूहिक प्रयास ने उन शक्तियों पर पूर्ण हृदय से विश्वास की मांग की है जिनसे दयालु 'स्वामी' ने 'उनके' प्रियजनों को सम्पन्न बनाया है। समीक्षा के इस क्षण में आपके साथ एकत्र होकर, मित्रों में वर्तमान योजना को उचित समापन देने की दृढ़ता तथा अनुभवों द्वारा चिन्हित् पथ पर आगे बढ़ने की उत्सुकता के प्रति हम सजग हैं।

2. इस पथ पर तय की गई यथेष्ट दूरी वर्तमान योजना के सर्वाधिक आकर्षक परिणामों से स्पष्ट होती है। 5000 क्लस्टरों में विकास के कार्यक्रम, चाहे वह सघनता के किसी भी स्तर पर हों, तक पहुँचने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रिज़वान 2016 तक के बचे महीनों में प्राप्त होता दिखाई पड़ता है। बीसियों क्लस्टरों में, हजार से अधिक -- कभी कभी कई हजार -- निवासी एक गतिविधि के ऐसे सुस्थापित प्रतिमान में भाग ले रहे हैं, जो वृहत्तर संख्या में लोगों का अंगीकार करते हैं, ऐसे समुदायों का विकास करते हैं जिनके विचार व कार्यकलाप की आदतें बहाउल्लाह के प्रकटीकरण में निहित हैं। पूरे विश्व में, पाँच लाख व्यक्तियों ने पाठ्यक्रम की श्रृंखला की कम से कम एक पुस्तक पूर्ण कर ली है, एक असाधारण साहासिक कार्य जिसने मानव संसाधन विकास की प्रणाली की एक निश्चित नींव डाल दी है। एक युवा पीढ़ी को, इस अकाट्य दूरदर्शिता के द्वारा कि वे किस प्रकार एक नये विश्व के निर्माण में योगदान दे सकती है, कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। उन्होंने जो देखा है, उससे आश्चर्यचकित होकर, कुछ स्थानों पर समाज के नेतागण बहाईयों पर दबाव डाल रहे हैं कि वे उनके कार्यक्रम, व्यापक रूप से उपलब्ध युवाओं को शिक्षित करने के लिए बनाएँ। बढ़ती जटिलता का सामना करती बहाई संस्थाएँ तथा उनकी एजेंसियाँ, मित्रों की बढ़ती संख्या के गतिविधियों को, सहयोग तथा आपसी मदद को बढ़ावा देकर, संयोजित करने के तरीके खोज रही हैं। सीखने की क्षमता, जो पूर्व

योजनाओं की अमूल्य धरोहर प्रस्तुत करती है, को विस्तार एवं सुगठन के परिक्षेत्र से परे बहाई प्रयत्नों के अन्य क्षेत्रों, मुख्यतया सामाजिक कार्यों तथा समाज में प्रचलित संवादों में प्रतिभागिता तक बढ़ाया जा रहा है। हम एक ऐसे समुदाय को देख रहे हैं जो, दो दशकों के एक समान उद्देश्य: समूहों द्वारा प्रवेश की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण प्रगति, पर केन्द्रित अनवरत प्रयासों की शक्ति तथा श्रम से अर्जित अनुभव के उपहारों से दृढ़ीकृत है।

3. इसमें कोई संदेह नहीं कि इस प्रक्रिया को अभी बहुत आगे जाना ही है; तथापि विकास दर्शाते हैं कि उल्लेखनीय प्रगति अब तक हो चुकी है। इसने प्रभु के मित्रों को उनकी योग्यताओं की अधिक कठिन परीक्षा को पूरा करने के लिए तैयार कर दिया है, जो आपकी संस्था से भी बहुत अधिक मांग करेगी, जब आप इसकी जरुरतों को पूरा करने के लिये उनको संगठित करेंगे। आने वाली योजना में जो प्रभुधर्म के रचनात्मक युग की दूसरी शताब्दी की देहरी पर समाप्त होगी, हम सभी अनुयायियों का आह्वान करेंगे कि उन बीजों को फलीभूत करने हेतु आवश्यक अत्यधिक परिश्रम करें, जो इतने प्रेम तथा परिश्रम से पूर्ववर्ती पाँच योजनाओं में बोये तथा सिंचित किये गये हैं।

एक विकास के कार्यक्रम का उद्भव

4. एक समुदायसमूह में विकास के कार्यक्रम का अनावृत होना, यद्यपि दिव्य शिक्षाओं के प्रभाव में आने वालों की ग्रहणशीलता के अनुसार प्रत्येक स्थान पर स्वाभाविक विशिष्ट चिह्नों को आकार देता है, कुछ साझी विशेषताओं के अनुरूप होता है। इनमें से अनेक की चर्चा 2010 के आपके सम्मेलन में दिये गये हमारे संदेश में, की गई थी, जिसमें हमने विकास की राह पर की गई प्रगति को चिन्हित् करते मील के पत्थरों के क्रम को संदर्भित किया था। हमारे द्वारा वर्णित मील के पत्थरों में से पहले मील के पत्थर को पार करने व तत्पश्चात दूसरे को, के लिए क्लस्टर की क्या आवश्यकता है, सम्बन्धित सामूहिक समझ इस समयावधि में बढ़ी है।

5. अभी समाप्त हो रही पाँच वर्षीय योजना में, अनुयायियों के सम्मुख कार्य रहा है, पिछली योजनाओं से जो कुछ सीखा गया था, उस सबको विकास की प्रक्रिया को हजारों नये क्लस्टरों तक पहुँचाने में लगाना। इसने दर्शाया है कि काफी कुछ बहाई संस्थाओं की योग्यता पर निर्भर करता है कि, दूसरे क्लस्टरों से मित्रों की मदद प्राप्त करना, उदाहरणार्थ भ्रमणशील शिक्षण समूहों अथवा ट्यूटरों की मदद का प्रबंध करके विद्यमान बहाई समुदाय के कार्यों को प्रबलित करना। अनेक स्थानों पर, संस्थान प्रक्रिया मुहल्ले के मजबूत समुदायों के अनुयायियों की सहायता से प्रारम्भ होती है, जो स्थानीय जनसमुदाय, विशेषकर युवाओं तक पहुँचने तथा उनके द्वारा सेवा कार्य प्रारम्भ करते

समय मदद करने के सृजनात्मक तरीके खोज लेते हैं। एक क्लस्टर में, विशेषकर वह जो प्रभुधर्म से अभी तक अछूता है, गतिविधियों को बढ़ावा देने के प्रयास अत्यंत बढ़ जाते हैं, यदि एक या अधिक व्यक्ति होमफ्रंट पायनियर के रूप में वहाँ स्थापित हो जाते हैं, उनका ध्यान गाँव के एक भाग पर अथवा भले ही एक गली पर केंद्रित करते हुए, जहाँ ग्रहणशीलता अधिक है। 4500 से भी कहीं अधिक अनुयायी पहले ही वर्तमान योजना में इस प्रकार सेवा देने के लिये उठ खड़े हुए हैं, जो एक विस्मयकारी उपलब्धि है।

6. किसी भी प्रकार की कार्यनीतियों के संयोग का उपयोग किया जाये, मुख्य उद्देश्य यह है कि क्लस्टर में क्षमता निर्माण की एक प्रक्रिया को प्रारम्भ किया जाये, जिसके द्वारा उसके निवासी अपने समुदायों की आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति की इच्छा से प्रेरित होकर सेवा के कार्यों को प्रारम्भ करने योग्य बनते हैं। एक बार जब यह मूलभूत आवश्यकता पूरी होती है, विकास का कार्यक्रम उभर आता है। निश्चित ही, आवश्यकता है 'सहायक मण्डल' सदस्यों तथा उनके सहायकों की मदद की, गतिविधियों की प्रथम क्रियाशीलता के साथ जिनके नजदीकी सम्बन्ध, मित्रों को इस सम्बन्ध में स्पष्ट तथा एकाकी दृष्टिकोण बनाये रखने में मदद करते हैं, कि आवश्यकता क्या है।

क्रियात्मक प्रतिमान को सुदृढ़ करना

7. जल्दी ही, क्लस्टर में मित्रों का एक नाभिक तैयार हो जाता है, जो साथ-साथ कार्य तथा परामर्श करते हैं और गतिविधियों का आयोजन करते हैं। विकास प्रक्रिया को और आगे बढ़ाने के लिये, इस प्रतिबद्धता को बांटने के लिए, लोगों की संख्या में वृद्धि अवश्य होनी चाहिये, तथा योजना के ढाँचे के भीतर प्रणालीबद्ध कार्य करने की क्षमता में भी अवश्य ही अनुरूप वृद्धि होनी चाहिये। एक जीवित अवयव की वृद्धि की भाँति, विकास भी उचित परिस्थितियाँ पाने पर तेजी से हो सकता है।

8. इन परिस्थितियों में सर्वप्रथम है संस्थान प्रक्रिया का सशक्त होना, चूँकि यह जनसमुदायों के अभिगमन को पोषित करने के केन्द्र में है। जिन मित्रों ने संस्थान सामग्री का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया है तथा अपनी ऊर्जाओं को बच्चों की कक्षाओं, किशोर समूहों, सामूहिक भक्तिपरक बैठकों के आयोजन में अथवा अन्य सम्बन्धित गतिविधियों में भी लगा रहे हों, उनकी मदद पाठ्यक्रमों के क्रम में आगे बढ़ने में की जा रही है, जबकि अपने अध्ययन को प्रारम्भ करने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जाती है। संस्थान पाठ्यक्रमों तथा कार्यक्षेत्र में प्रतिभागियों का प्रवाह बनाये रखने से, विकास प्रक्रिया को बनाये रखने में साथ देने वाले बढ़ते रहते हैं। विकास काफी हद तक ट्यूटर के रूप में सेवा दे रहे लोगों के प्रयासों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। इस प्रारम्भिक अवस्था में, उनमें से

अधिकतर अभी भी अन्य क्लस्टरों से बुलाये जा रहे हो सकते हैं, पर उसी समय, कुछ स्थानीय मित्रों को तैयार किया जा रहा है, जो कार्य करने की उनकी क्षमता जैसे ही बढ़ती है, अन्य लोगों की संस्थान सामग्री के अध्ययन में मदद करने लगते हैं। क्लस्टर से ट्यूटरों का प्रथम संवर्ग प्राप्त किये जाने वाले प्रयासों को दो अनचाहे परिणामों के मध्य की राह अपनानी होगी। यदि व्यक्ति संस्थान के पाठ्यक्रमों को कुछ ज्यादा शीघ्रता से करते हैं, तो सेवा करने की क्षमता पर्याप्त विकसित नहीं होती; इसके विपरीत यदि अध्ययन अधिक लम्बा खिंचता है, तो प्रक्रिया के विकास के लिये आवश्यक गत्यात्कमता छिन जाती है। अलग-अलग परिस्थितियों में आवश्यक संतुलन पाने के लिये सृजनात्मक हल उपयोग में लाये गये हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि, एक उचित काल में क्लस्टर में रहने वालों में से कुछ लोग ट्यूटर के रूप में सेवा देने योग्य बना दिये जाएँ।

9. निश्चित ही, यह प्रशिक्षण का प्रबंध स्वयं ही नहीं है जो प्रगति लाता है। यदि सेवा क्षेत्र में व्यक्तियों के साथ-साथ चलने की व्यवस्था तीव्रता से नहीं की जाती है, तो क्षमताओं के निर्माण के प्रयासों में कमी रह जाती है। सहायता का एक उपयुक्त स्तर, प्रोत्साहन के शब्दों से कहीं अधिक कारगर होता है। एक अनजाने कार्य को हाथ में लेने की तैयारी करते समय, कुछ अनुभवी व्यक्ति के साथ कार्य करना, आने वाली सम्भावना के प्रति सजगता बढ़ाता है। व्यावहारिक मदद का आश्वासन एक संकोची उपक्रमी को किसी गतिविधि को प्रथम बार प्रारम्भ करने का साहस प्रदान कर सकता है। किसी क्षण पर, प्रत्येक के पास उपलब्ध अन्तर्दृष्टि को विनम्रतापूर्वक साझा कर तथा सेवा पथ के अपने सहयात्रियों से उत्सुकतापूर्वक सीखकर, तब आत्माएँ साथ-साथ अपनी समझ को आगे बढ़ाती हैं। हिचकिचाहट कम हो जाती है तथा क्षमता उस बिंदु तक विकसित होती है जहाँ एक व्यक्ति गतिविधियों को स्वतंत्रतापूर्वक चला सकता है तथा, परिणामस्वरूप, उसी रास्ते पर अन्य के साथ-साथ चल सकता है।

10. जहाँ तक संस्थान की बात है, प्रतिभागियों का इसके पाठ्यक्रमों से प्रवाह इस बढ़ती आवश्यकता को जन्म देता है कि जब वे बच्चों के शिक्षक, अनुप्रेरक तथा ट्यूटर के रूप में सेवा देना आरम्भ करें, उनकी प्रणालीबद्ध विधि से मदद की जाये। अनुयायियों के मूल समूह को, जिन्होंने शैक्षणिक गतिविधियों में कुछ अनुभव प्राप्त कर लिया है, गतिविधियों में उनसे नये लोगों की सहायता करने के स्वाभाविक तौर पर अवसर प्राप्त होते हैं। एक व्यक्ति द्वारा दूसरों को सेवा के प्रयासों में आगे बढ़ने में मदद करने की तत्परता, उसको विशिष्ट जिम्मेदारियाँ दिला सकती है। इस प्रकार आवश्यकतानुसार शैक्षणिक प्रक्रिया के तीनों स्तरों के संयोजक धीरे-धीरे उभरने लगते हैं। उनके कार्य सदैव, दूसरों में क्षमता

का विकास देखने की इच्छा से तथा सहयोग एवं पारस्परिकता पर आधारित मित्रता का पोषण करने से, प्रेरित होते हैं।

11. स्पष्टतः, संस्थान प्रक्रिया वृहद प्रकार के उपक्रमों के लिए क्षमता में वृद्धि करती है; प्रारम्भिक पाठ्यक्रमों से, प्रतिभागियों को अपने मित्रों के घरों में भ्रमण करने हेतु तथा एक प्रार्थना साथ-साथ पढ़ने अथवा बहाई शिक्षाओं में से एक विषय उनके साथ बांटने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। मित्रों को इन प्रयत्नों में मदद करने के उपाय जो अभी तक बहुत कुछ अनौपचारिक हो सकते हैं, अन्ततः अपर्याप्त सिद्ध होते हैं, जो एक 'क्षेत्रीय शिक्षण समिति' के प्रकट होने की आवश्यकता का संकेत देते हैं। इसका मुख्य ध्यान, एक क्लस्टर में गतिविधि के प्रतिमान का सतत् विस्तार करने के लिये बहुधा, समूहों का निर्माण करके व्यक्तियों को संघटित करना है। इसके सदस्य, प्रत्येक को सामूहिक उद्यम में एक सम्भावित सहयोगी मानते हैं, और वे समुदाय में साझा उद्देश्य की चेतना के, पोषण करने के अपने स्वयं के योगदान के महत्व को समझते हैं। एक 'समिति' स्थापित होने के साथ ही, प्रार्थना के लिये बैठकें आयोजित करने, गृहभ्रमण करने तथा धर्म के शिक्षण के लिये पहले से किये जा रहे प्रयासों को अब काफी विस्तार दिया जा सकता है। आपको 'राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं' तथा 'क्षेत्रीय बहाई परिषदों' को, उतना ही प्रशिक्षण संस्थानों को भी, प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होगी, ताकि वे सजग रहें, जब क्लस्टर में परिस्थितियाँ संगठनात्मक व्यवस्थापन के लिए निश्चित आकार लेने की मांग करें -- न तो परिपक्वता से पूर्व कार्य करें और न ही औपचारिक ढाँचों को प्रकट करने में अनावश्यक देर होने दें।

12. व्यक्तियों की भाँति, क्लस्टर में प्रकट हो रही एजेंसियाँ भी अपने कर्तव्यों को पूरा करने में, मदद चाहती हैं। 'सहायक मण्डल' सदस्य इस ओर जो मदद उपलब्ध कराते हैं, वह आवश्यक है, परन्तु 'क्षेत्रीय बहाई परिषदों' की भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है या, जहाँ कोई परिषद नहीं है, वहाँ स्वयं 'राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा' की, तथा प्रशिक्षण संस्थानों के लिये भी यह अत्यावश्यक विचारणीय विषय है। क्लस्टर स्तर पर कुशलतापूर्वक सेवा देने की क्षमता तब बढ़ जाती है, जब वे अवसर उत्पन्न किये जाते हैं जहाँ सम्बद्ध अनुयायी मार्गदर्शन का अध्ययन कर सकते हैं, इसके प्रकाश में अपने कार्यों की समीक्षा करते हैं तथा उससे अन्तर्दृष्टि प्राप्त करते हैं तथा आस-पास के क्लस्टरों तथा उनसे भी आगे उत्पन्न हो रहे ज्ञान से जुड़ जाते हैं। काल्पनिक योजनाओं को बनाने के बजाय, ऐसे स्थानों में किये जा रहे परामर्श बहुधा क्लस्टर में उस क्षण की वास्तविकता को जानने तथा विकास को बढ़ावा देने के अविलम्ब अगले कदम को पहचानने के उद्देश्य से होते हैं। क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय स्तर पर सेवा देने वाले, मित्रों को सलाह देने तथा उनकी दृष्टि को बढ़ाने के लिए

बहुत कुछ कार्य कर सकते हैं कि क्या पूर्ण किया जा सकता है, किन्तु वे योजना निर्माण प्रक्रिया में अपनी अपेक्षाओं को थोपना नहीं चाहेंगे; बल्कि, वे उन अनुयायियों की मदद कर रहे हैं जो, वास्तविक परिस्थितियों से परिचय तथा समुदाय के तृणमूल स्तर पर बढ़ते हुए अनुभव के आधार पर, कार्ययोजना को तैयार करने और उसे लागू करने की अपनी क्षमता को क्लस्टर में धीरे- धीरे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। क्लस्टर एजेंसियों की प्रणालीबद्ध तरीके से सीखने तथा कार्य करने की क्षमता को विकसित करने के लिये, क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय संस्थाओं को उनकी मदद करने के अपने स्वयं के प्रयासों में सजग तथा विधिवत होना पड़ेगा। इस कार्य के लिये आपके सहायकों की मदद यह सुनिश्चित करेगी कि विकास प्रक्रिया का प्रत्येक तत्व आवश्यक विशेषताओं को प्राप्त कर ले तथा समस्त प्रयत्नों की अखण्डता तथा सामंजस्यता बनी रहे।

13. कार्य के द्वारा सीखने की लालसा, निश्चित ही, मित्रों में प्रारम्भ से है। गतिविधि का तिमाही चक्रों का प्रारम्भ, इस उभरती क्षमता का उपयोग करता है तथा इसको अनवरत प्रबलित होने देता है। यद्यपि यह क्षमता, एक चक्र की समीक्षा तथा योजना चरण से विशेष रूप से जुड़ी है, मुख्यतया समीक्षा बैठक, जो इसकी स्पंदित धड़कन को नियमित करती है, यह चक्र के अन्य सभी बिन्दुओं पर भी उनके द्वारा उपयोग की जाती है, जो कार्य की सम्बन्धित राहों पर चल रहे हैं। हमने देखा है कि, जैसे-जैसे सीख त्वरित हो जाती है, उनके मूल कारणों की पहचान कर, वास्तविक सिद्धान्तों की जाँच करके, सम्बन्धित अनुभवों को उपयोग में लाकर, निवारण के कदमों की पहचान करके, और विकास का मूल्याँकन करके, चाहे छोटी हों अथवा बड़ी, बाधाओं से उबरने के लिए मित्र अधिक योग्य हो जाते हैं, जब तक कि विकास की प्रक्रिया पूर्णतया पुनर्जीवित न हो जाये।

14. एक क्लस्टर की क्रिया के प्रतिमान के केन्द्र में व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूपांतरण है, जो 'ईश्वरीय शब्द' के माध्यम से सम्पन्न होता है। पाठ्यक्रमों की श्रृंखला के प्रारम्भ से ही एक प्रतिभागी ऐसे प्रभावशाली विषयों जैसे उपासना, मानवता की सेवा, आत्मा का जीवन, और बच्चों तथा युवाओं की शिक्षा पर ध्यान देते समय 'बहाउल्लाह के प्रकटीकरण' के सम्पर्क में आता है। जब व्यक्ति 'सृजनात्मक शब्द' का अध्ययन करने तथा उस पर गंभीर चिंतन करने की आदत को उपजाता है, रूपांतरण की यह प्रक्रिया, गहन अवधारणाओं की स्वयं की समझ को अभिव्यक्त करने की योग्यता तथा महत्वपूर्ण वार्तालाप के दौरान, आध्यात्मिक वास्तविकता को खोजने में प्रकट करती है। यह क्षमताएँ दृष्टिगोचर हैं न सिर्फ उन उच्च चर्चाओं में, जो बढ़ते स्तर पर समुदाय के आपस के वार्तालाप में चिन्हित् हो रही हैं, बल्कि इसके परे होने वाले अविरत वार्तालापों में भी, बहाई युवाओं और

उनके साथियों के मध्य ही नहीं, यह दायरा सम्मिलित करता है उन माता-पिताओं को भी जिनके पुत्रियाँ तथा पुत्र समुदाय के शिक्षा कार्यक्रमों से लाभ उठा रहे हैं। इस प्रकार के आदान-प्रदान से, आध्यात्मिक शक्तियों की सजगता बढ़ती है, दिखाई पड़ रहे द्विभाजन अप्रत्याशित अन्तर्दृष्टियों को स्थान दे देते हैं, एकता तथा समान आह्वान की भावना मजबूत होती है, यह विश्वास सुदृढ़ होता है कि अच्छे विश्व का निर्माण किया जा सकता है, और कार्यों के प्रति एक प्रतिबद्धता प्रकट हो जाती है। इस प्रकार के विशिष्ट वार्तालाप धीरे-धीरे अधिक बड़ी संख्या को विभिन्न सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेने के लिये आकर्षित करते हैं। आस्था तथा निश्चितता के विषय, इसमें भागीदारों की ग्रहणशीलता तथा अनुभव से प्रेरित होकर, स्वाभाविक रूप से प्रकट होते हैं। तब जो स्पष्ट है, वह यह कि जैसे-जैसे क्लस्टर में संस्थान प्रक्रिया गति पकड़ती है, शिक्षण का कार्य मित्रों के जीवन में अधिक महत्ता प्राप्त कर लेता है।

15. सतत् विकास के साथ, अर्थपूर्ण वार्तालाप की बढ़ती क्षमता संस्थाओं की योजनाओं में उपयोग में लाई जाती है। जब तक गतिविधि के चक्र औपचारिक रूप से प्रकट होते हैं, यह क्षमता विस्तार के चरण द्वारा, जो प्रत्येक चक्र के परिणाम को तय करने के लिये बहुत कुछ करता है, आगे उत्प्रेरित की जाती है। निश्चय ही, प्रत्येक विस्तार चक्र के सुनिश्चित उद्देश्य भिन्न होंगे, जो क्लस्टर की दशाओं तथा बहाई समुदाय की परिस्थितियों पर निर्भर करेंगे। कुछ स्थितियों में, इसका मुख्य उद्देश्य मूलभूत गतिविधियों में प्रतिभागिता बढ़ाना हो सकता है; जबकि अन्य में प्रभुधर्म में नामांकन के लिये तत्परता देखी जाती है। 'बहाउल्लाह के व्यक्तित्व' तथा 'उनके' मिशन के सम्बन्ध में वार्तालाप विभिन्न रूपों में हो सकते हैं, जिसमें फायरसाइड तथा गृहभ्रमण सम्मिलित हैं। इस चरण के दौरान किये गये कार्य सम्बद्ध संस्थान सामग्री को पढ़ने से विकासित की गई योग्यताओं को लागू करने तथा परिष्कृत करने का अवसर देते हैं। बढ़ते हुए अनुभव के साथ, मित्र यह समझने में माहिर हो जाते हैं कि कब उन्हें एक श्रोता मिला है, यह निर्णय लेने में कि कब उन्हें संदेश साझा करने में अधिक प्रत्यक्ष होना है, कि कब समझ के अवरोधों को हटाना है, तथा जिज्ञासुओं की मदद प्रभुधर्म को अपनाने में करनी है। समूहों में कार्य करने की पद्धति मित्रों को एक दूसरे के साथ मिलकर सेवा देने देती है, एक दूसरे की आपस में मदद प्रस्तुत करती है और आत्मविश्वास बढ़ाती है -- किन्तु कार्यों को अकेले करते समय भी, वे अपने प्रयासों को समन्वित कर अधिक प्रभावी बना रहे हैं। उनकी एकाग्रता तथा समय का निवेश, चक्र के इस छोटे लेकिन निर्णायक चरण की गहनता की मांग पूरी कर पाता है। यह उच्च संकल्प की चेतना समुदाय की शक्तियों को

बढ़ाने का कार्य करती है तथा प्रत्येक चक्र में मित्र अपने कार्यों द्वारा आकर्षित दैवीय मण्डल से प्राप्त शक्तिशाली सम्पुष्टियों पर अधिकाधिक निर्भर होना सीख जाते हैं।

16. पाँच वर्ष पूर्व, अधिकतर क्लस्टरों में जहाँ सघन विकास कार्यक्रम स्थापित कर दिया गया था, वहाँ पर्याप्त संख्या में बहाई पहले ही निवास कर रहे थे और अनेक बार यह भौगोलिक रूप से फैले हुए थे। इन अनुयायियों द्वारा कार्य में विकास करने के लिए, मित्रों, सहकर्मियों, वृहद परिवार तथा जानने वालों को दिए गए आमंत्रण के प्रयासों ने, पूरे क्लस्टर में गतिविधियों के स्तर को बढ़ाने में बहुत योगदान दिया। वास्तव में, प्रतिभागिता के दायरे को इस प्रकार बढ़ाना, बहाई जीवन का चिर परिचित पक्ष हो गया है तथा यह आवश्यक बना हुआ है। वहीं, अनुभव इंगित करता है कि संस्थान प्रक्रिया में नये प्रतिभागियों के नियमित प्रवाह द्वारा विकास में गति प्राप्त करने हेतु और अधिक की आवश्यकता है। सामुदायिक जीवन के प्रतिमान को उन स्थानों में विकसित किया जाना होगा, जहाँ ग्रहणशीलता उमड़ रही हो, जनसमुदाय के वे छोटे केन्द्र जहाँ सघन गतिविधियाँ स्थिर बनाई रखी जा सकें। यहीं पर, जब इस प्रकार के छोटे दायरे में समुदाय निर्माण का कार्य करते समय, सामुदायिक जीवन के गुंथे आयाम अत्यधिक सामंजस्य के साथ प्रकट होते हैं; यहीं पर सामूहिक रूपांतरण की प्रक्रिया अत्यंत प्रखरता से अनुभव की जाती है यहीं पर, समय के साथ प्रभुधर्म में निहित समाज-निर्माण की शक्ति सर्वाधिक दृष्टि गोचर हो जाती है।

17. अतः, आपके तथा आपके सहायकों के समक्ष आने वाली योजना के प्रारम्भ में मुख्य कार्य होगा कि प्रत्येक जगह मित्रों को यह समझने में मदद करें कि, विकास के विद्यमान कार्यक्रमों को शक्ति प्राप्त करते रहने के लिये, मोहल्लों तथा गाँवों में जहाँ सम्भावनाएँ दिखाई पड़ती हैं, वहाँ समुदाय-निर्माण गतिविधियों को प्रारम्भ करने की कार्यनीति व्यापक रूप से अवश्य ही अपनाई जाये तथा प्रणालीबद्धता के साथ पालन की जाये। इन क्षेत्रों में कार्य कर रहे लोग यह सीख जाते हैं कि किस प्रकार उन गतिविधियों का उद्देश्य समझाया जाये, किस प्रकार कार्यो द्वारा अपने प्रयोजनों की शुद्धता को दर्शाया जाये, किस प्रकार वातावरणों का पोषण किया जाये जहाँ हिचकिचाये जनों को आश्वासित किया जा सके, किस प्रकार निवासियों की मदद की जाये कि वे एक साथ कार्य करने से उत्पन्न धनी सम्भावनाओं को देख सकें, और किस प्रकार उन्हें प्रोत्साहित किया जाये कि वे अपने समाज के सर्वोत्तम हितों हेतु सेवा करने के लिए उठ खड़े हों। तथापि, इस कार्य के वास्तविक मूल्य की पहचान से इसके नाजुक चरित्र के बोध में भी बढ़ोत्तरी होनी चाहिये। एक छोटे क्षेत्र में उभर रहे कार्य के प्रतिमान अत्यधिक बाह्य ध्यान दिये जाने से

आसानी से नष्ट किये जा सकते हैं; अतः इन स्थानों में प्रयाण अथवा बहुधा इनका भ्रमण करने वाले मित्रों की संख्या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिये क्योंकि, अन्ततः गति में लाई गई प्रक्रिया वास्तव में वह है जो स्वयं निवासियों पर निर्भर करती है। तथापि, इसमें शामिल लोगों से अपेक्षा है कि उनमें लंबी अवधि की प्रतिबद्धता हो तथा उस स्थान की वास्तविकता से परिचित होने की ऐसी उत्कण्ठा हो कि वे स्थानीय जीवन से अन्तरंग हो सकें तथा किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह या पैतृत्ववाद से परे, सच्ची मित्रता के ऐसे बंधन में बंध जाएँ जो आध्यात्मिक सहयात्रियों के योग्य हों। इन दशाओं में जो गत्यात्मकता विकसित होती है, वह सामूहिक इच्छा तथा अभिगमन के मजबूत भाव को उत्पन्न करती है। समय के साथ, पूर्ण क्लस्टर तथा सघन गतिविधियों के इसके केन्द्र एक दूसरे के साथ उस बढ़ी समझ के साथ गुंथ जाएँगे, जो शिक्षाओं को विभिन्न संदर्भो में लागू करने के प्रयासों से प्राप्त होती है।

18. जब मित्र एक क्लस्टर में अपने चारों ओर आकार ले रही समुदाय-निर्माण गतिविधियों को प्रबलित करते तथा बढ़ाते रहते हैं, यह स्पष्ट हो जाता है कि एक खास विकास कर लिया गया है। विकास बनाये रखने की पद्धति के सभी आवश्यक तत्व अब अपना स्थान बना चुके हैं। विकास की सतत्ता में दूसरे मील के पत्थर पर पहुँचने के लिये, जिसे हमने पाँच वर्ष पूर्व स्पष्ट किया था, न सिर्फ गुणात्मक बल्कि संख्यात्मक विकास भी साथ होता है -- जैसे कि, वार्तालाप में भाग लेने वालों की संख्या में वृद्धि जो ग्रहणशीलता खोजना तथा पोषित करना सम्भव करते हैं, कितने गृहों का भ्रमण किया जा रहा है, मूलभूत गतिविधियाँ तथा इसमें प्रतिभागिता, कितने व्यक्ति पाठ्यक्रमों की श्रृंखला प्रारम्भ कर रहे हैं अथवा जब वे सेवा करने का विश्वास अर्जित कर लेते हैं तब दूसरों की मदद कर रहे हैं। 'उन्नीस दिवसीय सहभोज सभाओं' तथा 'बहाई पवित्र दिवसों' में उपस्थिति को 'स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं' द्वारा बढ़ावा दिया जाता है। इस प्रकार की उन्नति में अत्यंत सूक्ष्मतर विकास के अधिक स्पष्ट चिह्न हैं: एक जनसमुदाय में, बहाउल्लाह की शिक्षाओं पर आधारित सामुदायिक जीवन के प्रतिमान के धीरे-धीरे फैलने के। और स्वाभाविक रूप से अनुयायियों की संख्या में वृद्धि होती है।

19. पिछले पाँच वर्षों में, वह पथ जो सघन विकास कार्यक्रम के प्रकट होने की ओर ले जाता है, वह अधिक शीघ्रता से पहचाना जाने लगा है। इसका गंभीरतापूर्वक अनुसरण करना चाहिये। इस रिज़वान से जो योजना प्रारम्भ होगी, हम आह्वान कर रहे हैं कि उन सभी क्लस्टरों में जहाँ विकास आरम्भ हो चुका है, इसकी गति बढ़ाई जाए। अगले बीस चक्रों के दौरान स्वाभाविक उतार-चढ़ाव तथा बहाव, जो एक जैविक प्रक्रिया का भाग है, के बावजूद विकास का एक स्पष्ट वृतखण्ड दिखना चाहिये। रिज़वान 2021 तक सामूहिक

प्रयास द्वारा उन क्लस्टरों की संख्या 5000 तक पहुँचाने की कोशिश करनी चाहिये जहाँ विकास कार्यक्रम सघन हो चुका है।

20. हम बहाई विश्व के समक्ष सजगता के साथ यह लक्ष्य रखते हैं कि यह वास्तव में विकट है; कि एक अतिप्रबल श्रम की आवश्यकता होगी; कि अनेक त्याग करने होंगे। किन्तु विश्व की दुर्दशा देखते हुए जो, बहाउल्लाह के अमृत से अछूती, प्रत्येक दिन अधिक कष्ट का सामना कर रहा है, हम 'उनके' समर्पित अनुयायियों से, सजगतापूर्वक, कुछ भी कम नहीं मांग सकते। ईश्वर की इच्छा हुई तो, उनके प्रयास एक शताब्दी की मेहनत का योग्य मुकुट सिद्ध होंगे, तथा उन अकल्पनीय अद्भुत कर्मों के लिये मंच तैयार करेंगे जो अवश्य ही 'रचनात्मक युग' की दूसरी शताब्दी को आभूषित करेंगे।

21. आने वाले महीनों में, आप 'राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं' के साथ यह परखने के लिये परामर्श आरम्भ करेंगे कि उनके सम्बन्धित समुदायों के लिये इस वैश्विक लक्ष्य के मायने क्या हैं, एक परामर्श की प्रक्रिया जिसे शीघ्रता से बढ़ाई जानी होगी जब तक यह तृणमूल स्तर तक न पहुँच जाये। अतः कार्य अवश्य ही होना चाहिये। हम आशा करते हैं कि विकास उन क्षेत्रों में अधिक तेजी से प्राप्त किया जा सकेगा जहाँ एक या अधिक गहन विकास कार्यक्रम कुछ समय से बनाये रखे गये हैं, क्योंकि यह ज्ञान तथा अनुभव का मूल्यवान स्रोत उपलब्ध कराते हैं तथा आस-पास के क्षेत्रों को सशक्त करने का प्रयास करते समय मानव संसाधनों का संग्रह प्रस्तुत करते हैं। इस लक्ष्य का पीछा करने के परिणामस्वरूप नये विकास कार्यक्रम भी प्रकट होंगे, अनेक बार अछूते क्लस्टरों में जो उन क्षेत्रों के मुहल्ले में हैं जहाँ महत्वपूर्ण विकास हो चुका है। सहायता का इस प्रकार का प्रवाह अपना मूल 'दिव्य योजना की पातियों' की अनिवार्यताओं में पाता है।

बड़ी संख्या को अपनाना तथा जटिलताओं का प्रबंधन

22. जबकि, क्लस्टर में जब विकास कार्यक्रम अपनी शैशवावस्था में होता है, वहाँ इसको बढ़ावा देने वाले तथा जो प्रतिभागिता कर रहे हैं, गिने-चुने व्यक्ति मात्र कुछ गृहस्थियों से हो सकते हैं, जिस समय यह कार्यक्रम सघन हो जाता है, जैसा कि कोई आशा कर सकता है कि यह संख्या बढ़ चुकी होगी; सम्भवतः दसियों व्यक्ति विस्तार तथा सुगठन के कार्य में व्यस्त होंगे; जबकि प्रतिभागियों की संख्या सैकड़े को पार कर चुकी होगी। परन्तु बड़ी संख्या तक पहुँचने योग्य होने के लिये -- सौ या उससे अधिक व्यक्तियों को जुटाना जिनकी सेवाएँ उन्हें सैकड़ों अथवा यहाँ तक कि हजारों से जोड़ दें -- उस क्षमता की मांग करती है जो, जटिलता में महत्वपूर्ण वृद्धि के अनुरूप हों।

23. जैसे-जैसे विकास की प्रक्रिया सघनता प्राप्त करती जाती है, अर्थपूर्ण वार्तालापों में मित्रों के प्रयास, उन्हें व्यापक श्रेणी के लोगों को इन शिक्षाओं से परिचित कराने तथा समाज को बेहतर बनाने में अपने योगदान पर गंभीरतापूर्वक विचार करने के लिये, अनेक सामाजिक अवसरों को उपलब्ध कराते हैं। इसके अतिरिक्त, अधिकाधिक घरों को समुदाय-निर्माण गतिविधियों के लिये उपलब्ध कराया जाता है, जिनमें से प्रत्येक को दिव्य मार्गदर्शन के प्रकाश को फैलाने का स्थल बनाया जाता है। संस्थान प्रक्रिया को बढ़ती संख्या में ट्यूटर के रूप में योग्यतापूर्ण सेवा देने वाले मित्रों की मदद मिलती है, जो चक्र-दर-चक्र संस्थान पाठ्यक्रम के सम्पूर्ण क्रम को पूरा कराते हैं, कभी-कभी उल्लेखनीय सघनता के साथ। इस प्रकार मानव संसाधन विकास न्यूनतम रुकावटों के साथ आगे बढ़ता है तथा लगातार कर्मियों का बढ़ता हुआ भण्डार निर्माण करता है। जबकि यह क्लस्टर से विविध श्रेणी के निवासियों को आकर्षित करता रहता है, इसके पाठ्यक्रमों में बड़ी संख्या में प्रतिभागी बहुधा युवा होते हैं। 'ईश्वर के शब्द' के रूपांतरणकारी प्रभाव को अनेकों द्वारा तब अनुभव किया जाता है जब उनके जीवन को सामुदायिक गतिविधियों द्वारा किसी प्रकार स्पर्श किया जाता है। और जैसे-जैसे सेवा के पथ को प्रारम्भ करने वालों की संख्या में वृद्धि होती है, मित्रों के समुदाय निर्माण के प्रयासों के सभी पहलुओं में काफी विकास होता है। किशोर समूहों के अनुप्रेरकों, बच्चों की कक्षा के शिक्षकों की संख्या में वृद्धि होती है, जो इन दो अत्याश्यक कार्यक्रमों के विस्तार को बढ़ाते हैं। बच्चे एक ग्रेड की कक्षाओं से दूसरे में पहुँचने योग्य बनाये जाते हैं, जबकि किशोर वर्ष-दर-वर्ष प्रगति करते हैं तथा अपनी सीख को समाज की सेवा में लगाते हैं। क्लस्टर की एजेंसियाँ, 'स्थानीय आध्यात्मिक सभा' के सहयोग से उत्साहित होकर, प्रतिभागियों के शैक्षणिक प्रक्रिया के एक स्तर से दूसरे स्तर तक सहज प्रवाह को प्रोत्साहित तथा पोषित करती है। एक शैक्षणिक पद्धति अपने समस्त अवयवी तत्वों के साथ विस्तार की योजना रखते हुए, बड़ी संख्या में लोगों का स्वागत करने के लिये क्लस्टर में मजबूती से जड़ें जमा लेती है।

24. इस प्रकार के विकास के लिये क्लस्टरों में मित्र जहाँ भी रह रहे हैं उनके संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है। तथापि, वर्तमान योजना के अनुभव बताते हैं कि बड़ी संख्या को अपनाने योग्य कार्यों का प्रतिमान मुख्यतया अधिक मोहल्लों तथा गाँवों -- वह स्थान जहाँ एक ओर अग्रसर आध्यात्मिक शक्तियाँ लोगों के समूह में तीव्रता के साथ बदलाव लाती हैं -- को उस बिंदु तक लाने से प्राप्त होता है, जहाँ कि वे सघन गतिविधियों को बनाये रख सकें। उनमें से प्रत्येक के भीतर से व्यक्तियों का एक मूल समूह अपने निवासियों की क्षमता निर्माण की प्रक्रिया की जिम्मेदारी ले रहा है। जन समुदाय के वृहद भाग को वार्तालापों में सम्मिलित किया जा रहा है, पूरे समूहों के लिये एक साथ गतिविधियों को

उपलब्ध कराया जा रहा है -- मित्रों व पड़ोसियों के समूहों को, युवा समूह को, पूरे परिवारों को -- उनको यह आभास करने योग्य बना कर कि किस प्रकार उनके चहुँओर के समाज को नये सिरे से व्यवस्थित किया जा सकता है। सामूहिक उपासना के लिये मिलने की वर्तमान आदत, कभी-कभी भोर की प्रार्थना के लिये, सभी में बहाउल्लाह के 'प्रकटीकरण' के, अधिक गहराई से सम्बन्ध को पोषित करती है। प्रचलित आदतें, रीतिरिवाज तथा अभिव्यक्ति के तरीके सभी बदलाव योग्य हो जाते हैं - अधिक गहन आंतरिक रूपांतरण का बाह्य प्रकटन, जो अनेक आत्माओं को प्रभावित करता है। उनको साथ में बांधने वाले बंधन अधिक स्नेही हो जाते हैं। आपसी मदद, पारस्परिकता तथा एक दूसरे की सेवा की गुणवत्ता, गतिविधियों में संलग्न लोगों के बीच उभरती, गुंजित संस्कृति के चिह्नों के रूप में दिखने लगती है। इन स्थानों पर मित्र, क्लस्टर एजेंसियों की मदद, विकास प्रक्रिया को क्लस्टर के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ाने में करते हैं, क्योंकि वे दूसरों को रूपांतरण के इस दृश्य से परिचित कराना चाहते हैं, जो उन्होंने स्वयं देख लिया है।

25. अपने प्रयत्नों के दौरान, अनुयायी विशिष्ट जनसमुदायों में ग्रहणशीलता देख पाते हैं, जो विशिष्ठ प्रजातीय, जनजातीय अथवा अन्य समूहों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और वे जो छोटे दायरे में संकेन्द्रित हो सकते हैं अथवा पूरे क्लस्टर अथवा इसके परे भी उपस्थित हो सकते हैं। उस गत्यात्मकता से बहुत कुछ सीखना है जब इस प्रकार का जनसमुदाय प्रभुधर्म को स्वीकार करता है तथा इसके उच्च प्रभाव से प्रेरित हो जाता है। हम ईश्वर के धर्म को बढ़ाने में इस कार्य की महत्ता पर जोर देते हैं: 'बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था' में प्रत्येक जन का हिस्सा है, तथा सभी को मानवजाति की एकता के परचम तले अवश्य ही एक साथ एकत्र किया जाना चाहिये। अपने प्रारम्भिक चरणों में, जनसमुदाय तक पहुँचने तथा क्षमता निर्माण की प्रक्रिया में उनकी प्रतिभागिता को प्रोत्साहित करने के प्रणालीबद्ध प्रयास में सुस्पष्ट गति तब प्राप्त होती है, जब जनसमुदाय के सदस्य स्वयं इस प्रकार के प्रयास में मोर्चा सम्भालते हैं। ये व्यक्ति अपने समाज में उन शक्तियों एवं ढाँचों में विशेष अन्तर्दृष्टि रखेंगे जो विभिन्न प्रकार से, किये जा रहे प्रयत्नों को प्रबलित कर सकते हैं।

26. जैसे-जैसे क्लस्टर में विकास की गति आगे बढ़ती है, प्रशिक्षण संस्थान की संघटनात्मक व्यवस्था की मांगें बढ़ती जाती हैं। अतिरिक्त संयोजकों की अब आवश्यकता होती है, जिनमें से कुछ क्लस्टर के विशिष्ट भाग पर अपने प्रयासों को केन्द्रित कर सकते हैं। तथापि इसे प्रशासन की एक और तह में परिणित होने की आवश्यकता नहीं है। सहयोग के द्वारा काफी कुछ प्राप्त किया जा सकता है, जब संयोजकगण समूह के रूप में कार्य करने लगते

हैं, कभी-कभी अन्य क्षमतावान व्यक्तियों की मदद लेकर। इन समूहों के बीच होने वाली अन्तर्क्रियाओं तथा अनुभवों का आदान-प्रदान लगातार समझ को समृद्ध करता है तथा उनकी सेवाओं की प्रभावोत्पादकता को बढ़ाता है। संयोजक यह भी खोज पा रहे हैं कि उनके प्रयास और अधिक अच्छे किये जा सकते हैं, जब ट्यूटर के रूप में, अनुप्रेरकों के रूप में तथा बच्चों के शिक्षक के रूप में सेवा दे रहे मित्र, जो एक-दूसरे के आसपास रहते हैं, जहाँ वे सेवा देते हैं, वहाँ छोटे-छोटे समूहों में मिल पाएँ तथा एक दूसरे की मदद कर पाएँ।

27. इसी दौरान, 'क्षेत्रीय शिक्षण समिति' कार्य करने के नये स्तर को प्राप्त कर रही है। यह सम्पूर्ण क्लस्टर की परिस्थितियों के और अधिक पूर्ण अध्ययन में संलिप्त है: एक ओर समुदाय की क्षमताओं तथा सतत् विकास द्वारा उत्पन्न प्रभावों के सही आंकलन में तथा दूसरी ओर सामुदायिक निर्माण की अनेक सामाजिक वास्तविकताओं के लंबी आवधिक प्रभावों को समझने में। प्रत्येक चक्र में बनाई गई इसकी योजनाओं में 'समिति' उन पर काफी आश्रित रहती है जो विस्तार एवं सुगठन के कार्य के महत्तम भाग का बीड़ा उठाये हुए हैं, पर चूँकि अब गतिविधि के प्रतिमान से किसी भी प्रकार से जुड़े हुए लोगों की बड़ी संख्या है, अनेक प्रश्न अधिक दबाव बनाने लगते हैं: किस प्रकार शिक्षण लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद हेतु समस्त अनुयायियों को जुटाया जाये; किस प्रकार मित्रों के यहाँ गृहों के भ्रमण को प्रणालीबद्ध आयोजित किया जाये कि वे दृढ़ीकरण तथा विचार-विमर्श, जो उन्हें समुदाय से जोड़ता है, से लाभ उठाएँ; किस प्रकार बच्चों तथा किशोरों के माता-पिता के साथ आध्यात्मिक बंधनों को प्रबलित किया जाये; किस प्रकार उन मित्रों के लगाव पर आगे बढ़ा जाये, जिन्होंने प्रभुधर्म के प्रति सदिच्छा तो प्रकट की है, पर अभी गतिविधियों में भाग नहीं लिया है। प्रार्थना सभाओं को व्यापक रूप से आयोजित करने को बढ़ावा देना एक अन्य विचारणीय विषय है ताकि सैकड़ों, अन्ततः हजारों, लोग उनकी गृहस्थी के सदस्यों तथा पड़ोसियों के साथ, उपासना में लग जाएँ। अन्ततः, निश्चित ही, 'समिति' समुदाय के प्रयत्नों की पहुँच को लगातार बढ़ाने पर ध्यान देती है ताकि अधिकाधिक आत्माएँ बहाउल्लाह के संदेश से परिचित हो जाएँ। अपने कार्यों की जटिलताओं, जिनमें सांख्यिकीय एकत्र तथा विश्लेषण करना तथा साथ ही अन्य विभिन्न कार्य शामिल हैं, के प्रबंधन में वह 'समिति' अपने सदस्यों से परे व्यक्तियों की सहायता भी लेती है। ये जटिलताएँ 'स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं' के साथ बढ़ते हुए नजदीक सहयोग की भी मांग करती है।

28. गतिविधियों में बढ़ती संख्या में उपस्थिति के प्रत्युत्तर में, अपने योगदान के लिये, 'स्थानीय आध्यात्मिक सभा' बढ़ते समुदाय के प्रति अपनी अनेक जिम्मेदारियों के वहन

करने हेतु अपनी क्षमता बढ़ा रही है। यह एक ऐसा वातावरण बनाना चाहती है जिसमें, समुदाय के साझे उद्यम में योगदान देने के लिये, सभी प्रोत्साहित महसूस करते हैं। यह क्लस्टर एजेंसियों को अपनी योजनाओं में सफल होते देखने को उत्सुक है तथा अपने क्षेत्र की परिस्थितियों से अन्तरंग पहचान, इसे स्थानीय स्तर पर पारस्परिक क्रिया की प्रक्रियाओं के विकास को पोषित करने योग्य बनाती हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, यह मित्रों से कैम्पैंस तथा समीक्षा बैठकों में पूरे मन से प्रतिभागिता करने के लिए प्रेरित करती है, और स्थानीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों तथा पहलों में यह सामग्री संसाधन तथा अन्य सहायता मुहैया कराती है। सभा नये अनुयायियों को संवेदनशीलता से पोषित करने की आवश्यकता के प्रति भी सतर्क रहती है, इसे ध्यान में रखकर कि कब और कैसे सामुदायिक जीवन के विभिन्न आयामों से उन्हें परिचित कराया जाना है। संस्थान पाठ्यक्रम में उनकी भागीदारिता को प्रोत्साहित कर, यह सुनिश्चित करना चाहती है कि प्रारम्भ से ही वे नव विश्व निर्माण के कुलीन प्रयत्न में स्वयं को मुख्य पात्र समझें। यह देखती है कि 'उन्नीस दिवसीय सहभोज', 'पवित्र दिवस' समारोह तथा बहाई चुनावों की सभाएँ समुदाय के उच्च आदर्शों को प्रबलित करने, प्रतिबद्धता के साझा भाव को मजबूत करने, तथा इसके आध्यात्मिक चरित्र को सुदृढ़ करने के अवसर बन जाएँ। जैसे-जैसे समुदाय में संख्यात्मक वृद्धि होती है, 'सभा' विचार करती है कि कब इन बैठकों का विकेन्द्रीकरण लाभकारी होगा ताकि इन महत्वपूर्ण अवसरों पर सदा बढ़ती प्रतिभागिता को सुगम बनाया जा सके।

29. अग्रणी क्लस्टरों की एक उल्लेखनीय विशेषता होती है सीखने का चलन, जो पूरे समुदाय में व्याप्त होता है तथा संस्थागत क्षमता में बढ़ोत्तरी हेतु प्रेरक का कार्य करता है। पद्धति, तरीका अथवा पूरी प्रक्रिया में अन्तर्दृष्टि देने वाले विवरण, गतिविधि के स्थानों से और उसकी ओर, सतत् प्रवाहित होते रहते हैं। पूरे क्लस्टर के लिए होने वाली समीक्षा बैठक जिसमें इस सीख का बहुत कुछ भाग प्रस्तुत किया जाता है, अनेक बार छोटे क्षेत्रों की बैठकों द्वारा परिपूरित की जाती हैं, जो इसमें सम्मिलित होने वाले लोगों पर उत्तरदायित्व का अधिक मजबूत भाव उत्पन्न करती हैं। चक्र दर चक्र सामूहिक स्वामित्व का भाव -- आने वाली पीढ़ियों तक अपने आध्यात्मिक विकास के दायित्व का सजग भार उठाने के लिये एकता के सूत्र में बंधे लोगों द्वारा उत्पन्न शक्ति -- अधिक स्पष्ट होता है। और जब वे ऐसा करते हैं, क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय बहाई संस्थाओं तथा इनकी एजेंसियों से प्राप्त मदद, प्रेम के अटूट बहाव के रूप में अनुभव की जाती है।

30. जनसमुदाय के जीवन में धर्म के 'प्रकटीकरण' द्वारा संसाधन तथा सजगता में वृद्धि का स्वाभाविक परिणाम, सामाजिक कार्यों की शुरुआती हलचल के रूप में होता है। बहुधा इस प्रकार की पहलें जैविक रूप से किशोर सशक्तिकरण कार्यक्रम से प्रस्तुत होती हैं अथवा सामुदायिक सम्मेलनों में स्थानीय परिस्थितियों पर हुए परामर्श का परिणाम होती हैं। ऐसे प्रयत्न विविध प्रकार के होते हैं जो आकार ले सकते हैं, और उदाहरण के लिये इनमें शामिल हो सकते हैं, बच्चों को ट्यूटोरियल सहायता, भौतिक पर्यावरण को बेहतर करने की परियोजनाएँ, स्वास्थ्य वर्धन तथा रोगों की रोकथाम के लिये की गई गतिविधियाँ। कुछ पहलें, जारी रखी जाती हैं तथा धीरे-धीरे बढ़ती हैं। अनेक स्थानों पर तृणमूल स्तर पर सामुदायिक विद्यालयों की स्थापना, बच्चों को उचित शिक्षा तथा इसकी महत्ता के प्रति बढ़ी हुई चिंता के कारण हुई, जो संस्थागत सामग्रियों के अध्ययन से स्वभाविक रूप से प्रभाहित हुई है। किसी अवसर पर पास ही में कार्य कर रहे बहाई-प्रेरित संगठन द्वारा मित्रों के प्रयासों को अत्यधिक प्रबलित किया जा सकता है। प्रारम्भ में सामाजिक कार्यों का दृष्टांत चाहे कितना भी छोटा हो, यह संकेत देता है कि लोग अपने भीतर एक महत्वपूर्ण क्षमता उपजा रहे हैं, वह जो आने वाली शताब्दियों के लिए असीम सम्भावनाओं और महत्व को धारण किए हुए हैं: 'प्रकटीकरण' को सामाजिक अस्तित्व के विविध आयामों में किस प्रकार लागू करना सीख रहे हैं। इस प्रकार की सभी पहलें, वृहद समुदाय में प्रचलित संवादों में, व्यक्तिगत तथा सामूहिक स्तर पर प्रतिभागिता को भी सम्पन्न बनाती हैं। जैसा कि अपेक्षित था, मित्र अब समाज के जीवन में अधिक सम्मिलित हो रहे हैं -- ऐसा विकास जो क्लस्टर में प्रारम्भ से ही कार्यों के प्रतिमानों में निहित है, पर जो अब अधिक उद्घोषित हो रहा है।

31. एक जनसमुदाय के अभिगमन का यहाँ तक पहुँचना, दर्शाता है कि, यह प्रक्रिया जो इसे यहाँ तक लेकर आई, क्षमता निर्माण प्रयत्नों के सभी पक्षों में उच्च स्तर की प्रतिभागिता को प्राप्त करने व बनाये रखने के लिये तथा जटिलताओं के प्रबंधन की आवश्यकता के लिए काफी शक्तिशाली है। यह मील का एक अन्य महत्वपूर्ण पत्थर है जिसे मित्रों को पार करना है, लगातार तीसरा जब से क्लस्टर में विकास प्रक्रिया प्रारम्भ हुई थी। यह एक के बाद एक केन्द्र में, सामुदायिक जीवन के गत्यात्मक प्रतिमान के विकास की पद्धति के प्रकट होने को दर्शाता है जो एक जनसमूह -- स्त्री तथा पुरुष, युवा तथा वयस्क को अपने स्वयं के आध्यात्मिक तथा सामाजिक रूपांतरण के कार्य में लगाये रखता है। यह पहले ही अनेक सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को समेटता हुआ, लगभग दो सौ क्लस्टरों में हो चुका है, और हम आशा करते हैं कि आगामी योजना के अन्त तक यह और

कई सैकड़ों में भी दृष्टिगोचर होगा। यह वह भविष्य है जिसकी आकांक्षा अन्यत्र हजारों क्लस्टरों में श्रम कर रहे मित्र कर सकते हैं।

32. कुछ क्लस्टर में जहाँ विकास इस हद तक उन्नति कर चुका है एक, और अधिक रोमांचक प्रगति हुई है। इन क्लस्टरों में कुछ स्थान हैं जहाँ पूरी जनसंख्या का महत्वपूर्ण प्रतिशत अब समुदाय-निर्माण गतिविधियों में लगा हुआ है। उदाहरण के लिये, छोटे-छोटे गाँव हैं जहाँ संस्थान अपने कार्यक्रमों में सभी बच्चों तथा किशोरों की प्रतिभागिता करा चुका है। गतिविधि की पहुँच जब वृहद होती है, प्रभुधर्म का सामाजिक प्रभाव अधिक स्पष्ट हो जाता है। बहाई समुदाय को लोगों के जीवन में एक विशिष्ट नैतिक आवाज के रूप में उच्चतर स्थान प्राप्त हुआ है और वह उसके आसपास होने वाले, युवतर पीढ़ी का विकास जैसे, संवादों में एक जानकार दृष्टिकोण का योगदान देने योग्य है। वृहद समाज के अधिकारीगण, बहाउल्लाह की शिक्षाओं से प्रेरित सामाजिक क्रियाकलापों की पहलों से उत्पन्न अन्तर्दृष्टि तथा अनुभव के निकट आना प्रारम्भ कर देते हैं। उन शिक्षाओं से प्रभावित सामान्य हित से सम्बंधित वार्तालाप, जनसमुदाय के बड़े भागों में इस हद तक फैल जाते हैं कि एक इलाके में सामान्य संवादों में इसका प्रभाव देखा जा सकता है। बहाई समुदाय के अतिरिक्त, लोग 'स्थानीय आध्यात्मिक सभा' को विवेक के दीप्त स्रोत की तरह देखते हैं, जिसकी ओर वे भी प्रकाश हेतु मुड़ सकते हैं।

33. हम मानते हैं कि इस प्रकार के विकास अनेक के लिये अभी दूर का परिदृश्य है, उन क्लस्टरों में भी जहाँ गतिविधियों के प्रतिमान ने बड़ी संख्या को समाविष्ट किया हुआ है। किन्तु कुछ स्थानों में यह समकालीन कार्य है। इस प्रकार के क्लस्टरों में, जबकि मित्र विकास प्रक्रिया को बनाये रखने में व्यस्त हैं, बहाई प्रयत्न के अन्य आयाम उनके ध्यान के बढ़ते हुए भाग की मांग करते हैं। वे यह समझने का प्रयास कर रहे हैं कि किस प्रकार फलफूल रही स्थानीय जनसंख्या, उस समाज को, जिसका यह अविभाज्य भाग है, रूपांतरित कर सकती है। यह निकट भविष्य हेतु सीख का एक नया क्षितिज होगा, जहाँ अन्तर्दृष्टियाँ उत्पन्न होंगी, जो अन्ततः पूरे बहाई विश्व को लाभ पहुँचाएंगी।

युवाओं के सामथ्र्य को निर्मुक्त करना

34. सेवा के क्षेत्र में युवाओं द्वारा किये गये अद्भुत महाकार्य वर्तमान योजना के सर्वोत्तम फलों में से एक हैं। यदि युवाओं के असाधारण सामर्थ्य के किसी प्रमाण की आवश्यकता थी, तो यह अकाट्य रूप से प्रस्तुत कर दिया गया है। 2013 में आयोजित युवा सम्मेलनों के बाद क्लस्टरों में किये जा रहे कार्यों को दी गई ऊर्जा की लहर स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि किस प्रकार 'महानतम नाम' का समुदाय युवाजनों की उच्चतम अभिलाषाओं को आकार दे पाया है। हम यह देखकर कितना प्रसन्न हैं कि इन सम्मेलनों में 80,000 से

अधिक युवाओं की प्रतिभागिता के बाद, 1,00,000 से अधिक अतिरिक्त साथियों ने उनका साथ उसके बाद आयोजित विभिन्न समागमों में दिया है। समुदाय की गतिविधियों में, इन बढ़ते हुए समूहों के पूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित करने के उपायों को नई योजना का महती भाग अवश्य होना चाहिये।

35. युवाओं की उत्साहपूर्ण प्रतिभागिता इस तथ्य को उजागर करती है कि वे प्रत्येक ग्रहणशील जनसमुदाय, जिस तक मित्र पहुंच पाये हैं, के एक सर्वाधिक प्रत्युत्तर देने वाले तत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस सम्बन्ध में जो कुछ सीखा गया है वह है कि युवाजनों की किस प्रकार मदद की जाये कि अपने समाज के सुधार में वे जो योगदान दे सकते हैं उसे जान पाएँ। जब चैतन्यता को बढ़ाया जाता है, वे बहाई समुदाय के उद्देश्यों के साथ उत्तरोत्तर पहचान बना लेते हैं तथा किये जा रहे कार्य को अपनी ऊर्जा देने के लिए आतुरता व्यक्त करते हैं। इन बिन्दुओं पर वार्तालाप रुचि जागृत करते हैं कि, जीवन के इस काल में उन्हें उपलब्ध, शारीरिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों को किस प्रकार दूसरों की आवश्यकताओं, विशेषकर युवतर पीढ़ी की आवश्यकताओं, को पूरा करने की ओर निर्देशित किया जा सकता है। इस हो रहे वार्तालाप में सघनता लाने के लिये, युवाओं के लिये क्लस्टर और यहाँ तक कि मोहल्ला या गाँव के स्तर पर कम अन्तराल में आयोजित की जाने वाली विशेष सम्मेलन, आदर्श अवसर सिद्ध हुई हैं, तथा वे अनेक क्लस्टरों में गतिविधि चक्रों की बढ़ती हुई सामान्य विशेषता हैं।

36. अनुभव सुझाता है कि, समाज को बेहतर बनाने का विचार-विमर्श प्रोत्साहन के गहनतम सोतों तक पहुँचने में असफल रहता है यदि यह आध्यात्मिक विषयों का अनुसंधान नहीं करता। “करने” की महत्ता -- सेवा के लिये उठ खड़े होने और संगी के साथ-साथ चलने; व “होने” के विचार -- दैवीय शिक्षाओं की समझ बढ़ाने तथा स्वयं के जीवन में आध्यात्मिक गुणों को प्रदर्शित करने के मध्य सामंजस्यता अवश्य, ही होनी चाहिये। और इसीलिये मानवता हेतु प्रभुधर्म, की दृष्टि तथा इसके मिशन के उच्च चरित्र से परिचित होकर, स्वाभाविक रूप से युवा सेवा के लिए प्रस्तुत होने की इच्छा रखते हैं, ऐसी इच्छा, जिसका प्रशिक्षण संस्थान अविलम्ब प्रत्युत्तर देते हैं। वास्तव में, युवा की इस क्षमता को निर्मुक्त करना प्रत्येक प्रशिक्षण संस्थान का पवित्र दायित्व है। फिर भी, उस क्षमता के विकसित होने पर उसे पोषित करना प्रभुधर्म की प्रत्येक संस्था की जिम्मेदारी है। चाहे युवा पहल करने के लिये कार्य करने की किसी भी दिशा को चुनें, युवाओं द्वारा दिखाई जा रही तत्परता इस तथ्य को अव्यक्त सकती है कि प्रारम्भिक कदमों से परे, उन्हें संस्थाओं तथा क्लस्टरों की एजेंसियों से सतत् सहायता की आवश्यकता है।

37. समूहों में एक साथ आकर आगे अध्ययन करने तथा अपनी सेवाओं पर विचार-विमर्श कर, एक दूसरे के प्रयासों को प्रबलित तथा निश्चय कर, उत्सुकतापूर्वक अपनी मित्रता का सदैव दायरा बढ़ाकर, युवा भी, इस सम्बन्ध में, एक-दूसरे की मदद करते हैं। दोस्तों के जाल द्वारा इस प्रकार उपलब्ध कराया गया प्रोत्साहन, युवाओं को उन मोहिनी आवाजों का, जो उपभोक्तावाद तथा बाध्यकारी ध्यान भंगन की ओर ले जाती हैं, बहुत आवश्यक विकल्प साथ ही, दूसरों का दानवीकरण करने की पुकारों का प्रतिकार भी उपलब्ध कराता है। इसी शक्ति ह्रासक भौतिकवाद तथा खंडित होते समाजों की पृष्ठभूमि में, किशोर सशक्तिकरण कार्यक्रम इस समय अपने विशेष मूल्य को प्रकट करता है। यह युवाओं को वह आदर्श कार्यक्षेत्र उपलब्ध कराता है, जिसमें वे अपने से कम उम्र वालों की उन क्षयकारी शक्तियों का विरोध करने में सहायता कर सकें, जो विशेषकर उन्हें निशाना बनाती हैं।

38. जैसे-जैसे युवा सेवा पथ पर आगे बढ़ते हैं, उनके प्रयत्न अखण्ड रूप से क्लस्टर की गतिविधियों में अन्तरंग होते हैं और परिणामस्वरूप पूरा समुदाय एक जुटता से विकास करता है। युवाजनों के परिवार तक पहुँचना समुदाय निर्माण को स्वाभाविक रूप से सशक्त करने का रास्ता है। संस्थाओं तथा एजेंसियों को युवाओं की शक्ति को प्रणालीबद्ध रूप से प्राप्त करने के रास्ते खोजने के लिए उनकी स्वयं की क्षमता बढ़ाने की चुनौती प्राप्त होती हैं। इस आयु वर्ग की परिस्थितियों तथा गत्यात्मकता की बेहतर समझ के साथ वे तदानुसार योजना बना सकते हैं -- उदाहरणार्थ, युवाओं को पाठ्यक्रमों के सघन अध्ययन के अवसर उपलब्ध कराकर, सम्भवतः युवा सम्मेलनों के समापन के तुरंत बाद। जीवंत युवाओं के समूह से ऊर्जा का संचार समुदाय के भीतर के कार्यों की गति को तेजी प्रदान करता है।

39. यद्यपि जिनके पास सेवा के पथ पर देने के लिए बहुत कुछ है उनसे महान कार्यों की अपेक्षा सही है, मित्रों को एक संकीर्ण दृष्टिकोण अपनाने से चौकन्ना रहना होगा कि परिपक्वता की ओर विकास की आवश्यकता क्या है। आवागमन की स्वतंत्रता तथा समय की उपलब्धता कई युवाओं को इस प्रकार सेवा देने योग्य बनाती है जो समुदाय की आवश्यकताओं से सीधे सम्बन्धित है, पर जब वे जीवन के दूसरे दशक में बढ़ते हैं उनका क्षितिज बढ़ जाता है। सामंजस्यपूर्ण जीवन के तथा बराबरी की मांग करने वाले, उच्च सराहनीय अन्य आयाम उनके ध्यानाकर्षण पर अधिक मजबूत दावा करना प्रारम्भ कर देते हैं। उनके सामने उपलब्ध सम्भावनाओं के अनुसार अनेक के लिये तात्कालिक प्राथमिकता, आगे की अकादमिक अथवा व्यावसायिक शिक्षा होगी तथा उनके समक्ष समाज के साथ पारस्परिक क्रिया के नये क्षेत्र खुल जाते हैं। इसके अतिरिक्त, युवा महिला

व पुरुष 'महानतम लेखनी' के आह्वान "विवाह बंधन में बंधो" ताकि वह "उसे उत्पन्न कर सकें जो 'मेरे' सेवकों के बीच 'मेरा' उल्लेख करे" तथा "शिल्प तथा व्यवसायों में उद्यमशील रहो" के प्रति अत्यधिक सजग हो जाते हैं। व्यवसाय में शामिल होने के पश्चात, स्वाभाविक है कि युवा अपने क्षेत्र में योगदान देना चाहते हैं, अथवा 'प्रकटीकरण' के अपने सतत् अध्ययन से प्राप्त अन्तर्दृष्टि के प्रकाश में, वे इसमें भी आगे बढ़ना चाहते हैं, और वे अपने कार्य में उत्कृष्टता तथा सत्यनिष्ठा का उदाहरण बनना चाहते हैं। बहाउल्लाह उनका गुणगान करते हैं "जो अपने व्यवसाय द्वारा जीविका अर्जित करते हैं तथा ईश्वर, सभी लोकों के 'स्वामी' के प्रेम के कारण, स्वयं पर तथा अपने परिजनों पर उसे खर्च करते हैं।" इस पीढ़ी के युवा उन परिवारों का निर्माण करेंगे जो समृद्ध समुदायों की नींव निश्चित करेंगे। बहाउल्लाह के प्रति बढ़ते उनके प्रेम तथा उस स्तर के प्रति प्रतिबद्धता जिसका 'वह' आह्वान करते हैं, के कारण उनके बच्चे "अपनी माँ के दूध के साथ मिश्रित" ईश्वर के प्रेम का भी पान करेंगे, तथा सदा 'उनके' दिव्य विधान की छत्रछाया चाहेंगे। तब स्पष्ट है कि, युवाओं के प्रति बहाई समुदाय की जिम्मेदारी तभी समाप्त नहीं हो जाती जब वे सेवा क्षेत्र में प्रथम कदम रखते हैं। अपने वयस्क जीवन को दिशा देने के उनके महत्वपूर्ण निर्णय, यह तय करेंगे कि ईश्वर के धर्म के प्रति उनकी सेवा, उनके युवा काल का केवल एक संक्षिप्त तथा यादगार अध्याय था अथवा पृथ्वी पर उनके अस्तित्व का नियत केन्द्र बिंदु, एक ताल जिसके द्वारा सभी क्रिया केन्द्रीभूत हो जाती हैं। हम आप पर तथा आपके सहायकों पर यह सुनिश्चित करने के लिये भरोसा करते हैं कि युवाओं के आध्यात्मिक तथा भौतिक भविष्य को परिवारों, समुदायों, एजेंसियों तथा संस्थाओं के विचार-विमर्श में यथोचित महत्व दिया जाये।

संस्थागत क्षमता को बढ़ाना

40. वर्तमान योजना की मांगों के लिए -- हजारों विकास के नये कार्यक्रमों की स्थापना तथा विद्यमान को सशक्त करना -- राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय संस्थाओं तथा आपसे भी अत्यधिक शक्ति एवं समन्वय की आवश्यकता थी। योजना के तीन मुख्यपात्रों -- व्यक्ति, समुदाय तथा संस्थाओं के मध्य सहयोग की साझी चेतना के कारण उन्हें पूरा करना सम्भव हो पाया था। प्रत्येक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व, जिसमें सम्मिलित हैं, चुने हुए देशों में पायनियरों की स्थापना, तथा निश्चित ही, 114 युवा सम्मेलनों के आयोजन, के लिए यही चेतना पूर्व-आवश्यकता थी। आनंदपूर्ण सेवा की व्याप्त अभिवृत्ति, लचीलेपन तथा स्वयं की प्राथमिकताओं से अनासक्ति ने नित्यक्रम की प्रशासनिक गतिविधियों को भी एक पवित्र गुण प्रदान कर दिया। आगामी योजना की नई मांगें भी, निःसंदेह, बहाई

संस्थाओं की क्षमता की और भी अधिक परीक्षा लेंगी, परन्तु चाहे कुछ भी हो, निश्चिय ही, वे सभी साथ-साथ कार्य करने वालों की इस एकीकृत चेतना को बनाये रखेंगे।

41. जैसा कि पहले इंगित किया गया था, अबाधक्रम के साथ चल रहे क्लस्टरों का गमन संस्थाओं द्वारा, क्लस्टरों की एजेंसियों को मार्गदर्शन तथा मदद एवं आवश्यकतानुसार संसाधन उपलब्ध कराने के प्रति प्रतिबद्धता पर निर्भर है। यह कार्य 'क्षेत्रीय बहाई परिषदों' एवं क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थानों के कंधों पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। पिछले पाँच वर्षों में विश्व में परिषदों की संख्या 170 से बढ़कर 203 हो गई है, जो इस स्तर पर कार्य करने की बढ़ती आवश्यकता तथा क्षमता को प्रदर्शित करती है, और कुछ देशों में जहाँ अभी 'परिषदों' की स्थापना होनी है, उनके प्रकट होने की प्रत्याशा में, अनुभव प्राप्त करने हेतु स्पष्ट कदम उठाये गये थे, जैसे कि क्षेत्रीय समूहों की नियुक्ति। कुछ क्षेत्रों में जिनका क्षेत्रफल विशाल है, परिषदों ने निकटवर्ती क्लस्टरों के समूहों के विकास को पोषित करने के लिये कदम उठाये हैं। इसी दौरान, छोटे देशों में जहाँ 'क्षेत्रीय परिषदों' की स्थापना की आवश्यकता नहीं है, राष्ट्रीय सभाएँ, क्लस्टरों के विकास में मदद करने के तौर-तरीकों पर अधिकाधिक विचार कर रही हैं, कुछ मामलों में, कार्य समूहों का निर्माण कर उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई है; आपको इस क्षेत्र में सीख को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, इस लक्ष्य के साथ कि, समय के साथ, इन औपचारिक ढाँचों को ऐसे परिभाषित किया जा सकता है कि जो जिम्मेदारी लगभग उसी प्रकार वहन करेंगे जैसे कि दूसरे देशों में 'परिषदें' करती हैं। और, जैसा कि 'परिषदों' के सम्बन्ध में है, हम देख पा रहे हैं कि राष्ट्रीय स्तर पर उभरता ऐसा कोई भी ढाँचा सलाहकारों की संस्था के साथ विचार-विमर्श से लाभ प्राप्त करेगा।

42. अपने कर्तव्यों को प्रभावकारी ढंग से पूरा करने हेतु, क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय संस्थाओं को, जिन क्लस्टरों के विकास का वे आंकलन करते हैं, उनके तृणमूल स्तर पर हो रहे विकास तथा प्राप्त की जा रही सीख से उन्हें पूर्ण परिचित रहने की आवश्यकता पड़ेगी। उनके अधिकार क्षेत्र के क्लस्टरों के अभिगमन तथा संस्थान के कार्य की सामयिक जानकारी की आवश्यकता, संस्थाओं को उनकी एजेंसियों की मदद हेतु तथा इससे सम्बन्धित अनेक विषयों, उदाहरणार्थ, पायनियरों की स्थापना, धन का आवंटन, बहाई साहित्य का निर्माण तथा बढ़ावा, संस्थागत बैठकों की योजना; के निर्णय लेने के लिए पड़ती है; यह अपने समुदायों की वास्तविकता के सही अध्ययन में तथा स्पष्ट समझी हुई आवश्यकताओं के अनुसार जब समय की अनिवार्यताओं के लिए, मित्रों की ऊजाओं के उपयोग की, प्राथमिकता निर्धारण करना होता है, तब कार्य करने की गुंजाइश देता है। विभिन्न

अन्तरालों पर एक 'राष्ट्रीय सभा', आपके साथ परामर्श कर, सीखे गये पाठों, विशेषकर क्लस्टर तथा क्षेत्रीय स्तरों पर संघटनात्मक परियोजनाओं से सम्बन्धित कुछ पक्षों को, औपचारिक रूप से स्वीकार करने तथा उन्हें फैलाने को उपयुक्त मान सकती है। उन बड़े देशों की 'राष्ट्रीय सभाओं' के लिये, जहाँ अनेक 'क्षेत्रीय परिषदें' हैं, और मुख्यतया जब 'सभा' ने 'परिषदों' को संस्थान का प्रशासन कार्य दे दिया है, समुदाय के एकत्र हो रहे अनुभवों से भलीभाँति सुचित रहने की आवश्यकता विशेष मायने रखती है। सभी क्षेत्रों में जो सीखा जा रहा है, उसके सटीक विश्लेषण को 'सभा' को उपलब्ध कराने के लिये, कभी-कभी राष्ट्रीय स्तर पर, नई व्यवस्थाओं की आवश्यकता पड़ती है।

43. निश्चित ही, अन्ततः एक 'राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा' की जिम्मेदारी है कि बहाई समुदाय के विकास के सभी पक्षों को पोषित करे। यद्यपि यह कार्य की विभिन्न नीतियों का पालन करने में स्वयं लगी रहती है, अनेक मामलों में यह सुनिश्चित कर अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करती है कि 'क्षेत्रीय परिषदें' या विशिष्ट एजेंसियाँ उनको सुपुर्द किये गये प्रयत्न के क्षेत्रों को आगे बढ़ाने के लिए कदम उठाएँ। जब मित्रों की क्षमता में वृद्धि होती है तथा समुदाय का आकार बढ़ता है, 'राष्ट्रीय सभा' का अनेक आयामों में कार्य, समानुपात में अधिक जटिल हो जाता है। अतः आगामी योजना में इन संस्थाओं के समक्ष कार्य की विशालता को देखते हुए, 'राष्ट्रीय सभाएँ' -- 'परिषदें' भी -- आपके सहयोग से, समय-समय पर इसका ध्यान रखकर लाभ उठाएँगी, कि चाहे उनके प्रशासनिक कार्य हों और वास्तव में उनके स्वयं के क्रियाकलाप के तत्व हों, इस प्रकार से समायोजित अथवा उच्च किये जा सकते हों ताकि विकास प्रक्रिया की बेहतर मदद की जा सके।

44. इसी प्रकार, प्रशिक्षण संस्थानों के लिये भी उच्चतर स्तर की कार्यपद्धति को प्राप्त करना अत्यावश्यक प्रयोजन है। हजारों क्लस्टरों में विकास कार्यक्रमों को सशक्त करने तथा उन्हें सघन बनाये रखने के समुदायों के प्रयास इन एजेंसियों पर भारी मांग डालेंगे। निश्चय ही, उनका ध्यान शैक्षणिक प्रक्रिया के तीन स्तरों के अनावृत होने पर, जिन पर वे नज़र रखते हैं, तथा प्रत्येक के साथ जुड़ी सीखने की प्रक्रिया को सशक्त करने पर होगा, ताकि संस्थान की गतिविधियों की गुणवत्ता तथा सदैव बढ़ रही संख्या तक इन्हें पहुँचाने की क्षमता, दोनों लगातार बढ़ती रहें। जबकि, यह महत्वपूर्ण है कि संस्थान अपने दिन प्रतिदिन के कार्य के परिचालन मामलों का ध्यान रखें, उस कार्य की मात्रा, जिसे पूरा किया जाना है, उनसे मांग करती है कि वे कार्यनीति पर विचार करने में भी संलग्न रहें। प्रशिक्षण संस्थान मण्डलों के लिए राष्ट्रीय अथवा क्षेत्रीय संयोजकों, साथ ही, 'सहायक मण्डल' सदस्यों के साथ सतत् परामर्श भी बनाये रखना आवश्यक है, कि किस प्रकार

क्लस्टर में एक गतिविधि शक्ति प्राप्त करती है, किस प्रकार इसको उपयुक्त संसाधन उपलब्ध कराये जा सकते हैं, विभिन्न पृष्ठभूमियों में कौन से तरीके प्रभावकारी सिद्ध होते हैं, और अनुभवों को किस प्रकार बांटा जा सकता है। इस संयोजकों के समूह द्वारा अध्ययन वृत्त कक्षाओं, किशोर समूहों तथा बच्चों की कक्षाओं को बढ़ाने से सम्बन्धित, तृणमूल स्तर पर प्राप्त अन्तर्दृष्टियों को एकत्र करने तथा उन्हें लागू करने के प्रणालीबद्ध तथा संकेन्द्रित प्रयास हमारे मस्तिष्क में हैं। संस्थान के कार्यो के अन्य आयामों -- जैसे कि, क्लस्टर स्तर पर संयोजन की नीतियाँ, संयोजकों की क्षमता बढ़ाना, तथा सांख्यिकीय एवं वित्त प्रबंधन -- पर ध्यान देना भी आवश्यक होगा। प्रशिक्षण संस्थानों के साथ आपके कार्य में, निश्चित रूप से आप यह प्रबंध करना चाहेंगे कि विश्व के उसी हिस्से की अन्य संस्थानों के अनुभव का वे उपयोग करें। किशोर कार्यक्रम की सीख को फैलाने वाले केन्द्र भी पास के देशों अथवा क्षेत्रों के संस्थानों के लिये अन्तर्दृष्टि का सम्पन्न स्रोत उपलब्ध कराते हैं।

45. जब संस्थाएँ तथा एजेंसियाँ प्रत्येक जगह प्रसार तथा सुगठन की प्रक्रियाओं को तेजी प्रदान करना चाहती हैं, वित्तीय संसाधनों का विषय निःसंदेह बढ़ा हुआ ध्यान चाहेगा। वास्तव में, आने वाले वर्षों में संस्थागत क्षमता में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण पक्ष, स्थानीय तथा राष्ट्रीय 'कोषों' का हो रहा विकास होगा। इसे घटित होने के लिये, सभी मित्रों को अवश्य ही आमंत्रित किया जाना चाहिये कि वे इस पर पुनःविचार करें कि यह सभी अनुयायियों की जिम्मेदारी है कि धर्म के कार्यों की मदद स्वयं के साधनों से करें और, इसके अतिरिक्त, स्वयं के वित्तीय मामलों का प्रबंधन, शिक्षाओं के प्रकाश में करें।

46. बहाउल्लाह द्वारा प्रकल्पित भविष्य की सभ्यता समृद्ध होगी, जिसमें विश्व के वृहद संसाधन मानवता के उन्नयन तथा सुधार की ओर लगाये जाएँगे, न कि इसकी अधोगति तथा विनाश हेतु। कोष में दान का कार्य तब, गहन अर्थ से भर जाता है: यह उस सभ्यता के आगमन को तीव्र करने का व्यावहारिक उपाय है, जो आवश्यक भी है, क्योंकि जैसा स्वयं बहाउल्लाह ने समझाया है, "'वह' जो 'शाश्वत' सत्य है -- उच्च हो 'उसका' गौरव -- ने पृथ्वी पर प्रत्येक कार्य की पूर्णता को भौतिक साधनों पर निर्भर बनाया है।" बहाई अपना जीवनयापन एक ऐसे समाज के मध्य करते हैं जो कि अपने भौतिक कार्यों में अत्यंत अव्यवस्थित है। अपने क्लस्टरों में जिस प्रकार की समुदाय निर्माण की प्रक्रिया को वे बढ़ावा दे रहे हैं वह, धन तथा सम्पत्ति के प्रति उनकी तुलना में, जो दुनिया में व्याप्त हैं, अत्यंत अलग प्रकार की अभिवृत्तियों को उपजाती है। 'प्रभुधर्म' के 'कोषों' में नियमित देने की आदत -- जिसमें विशेषकर कुछ स्थानों में वस्तुओं के दान भी सम्मिलित हैं -- समुदाय के कल्याण तथा 'प्रभुधर्म' की प्रगति के लिए व्यक्तिगत चिंता के भाव से

उत्पन्न होती है और उसे सुदृढ़ बनाती है। दान का कत्तव्य, शिक्षण के कर्तव्य की भाँति बहाई पहचान का मूलभूत पक्ष है, जो आस्था को प्रगाढ़ करता है। व्यक्तिगत बहाई के त्यागपूर्ण तथा उदार योगदान, 'कोष' की आवश्यकता के प्रति समुदाय द्वारा प्रेरित सामूहिक चैतन्यता, प्रभुधर्म की संस्थाओं द्वारा वित्तीय संसाधनों का सावधानीपूर्वक प्रबंधन को, प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में समझा जा सकता है जो इन तीन मुख्यपात्रों को और नजदीकी से एक-दूसरे के साथ जोड़ता है। और अन्ततः, स्वैच्छिक दान ऐसे बोध को पोषित करता है कि अपने वित्तीय मामलों का आध्यात्मिक सिद्धान्तों के अनुसार प्रबंधन करना, सामंजस्य के साथ जिये गये जीवन का अपरिहार्य आयाम है। यह चैतन्यता का विषय है, एक राह जिसमें विश्व की बेहतरी के प्रति प्रतिबद्धता व्यवहार में परिवर्तित होती है।

47. हम आपकी बेजोड़ जिम्मेदारी को मानते हुए इन वक्तव्यों को आपको निर्देशित कर रहे हैं कि आप, आपके प्रतिनिधि तथा उनके सहायक, मित्रों की मदद अनेक क्षेत्रों में समझ बढ़ाने के लिए कर रहे हैं, जिसमें निश्चित ही, विकास की गत्यात्मकता कम महत्वपूर्ण नहीं है। जैसा कि हमने सलाहकारों की संस्था में पहले इंगित किया था, बहाई समुदाय के पास ऐसी पद्धति है जिसमें भूमण्डल के सुदूरतम भाग में सीखे गये पाठ, विश्वव्यापी सीखने की प्रक्रिया, जिसमें बहाउल्लाह का प्रत्येक अनुयायी भाग ले सकता है, को लाभ पहुँचा सकती हैं। समय के साथ जब अनुयायियों को, पाँच वर्षीय योजना की गहन समझ प्राप्त होती है, तब मार्गदर्शन लागू करने से प्राप्त अन्तर्दृष्टियाँ पहचानी जाती हैं, अभिव्यक्त की जाती हैं, आत्मसात की जाती हैं तथा बांटी जाती हैं। इस सम्बन्ध में 'महानतम नाम' का समुदाय 'अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र' के प्रति कृतज्ञता का अत्यधिक ऋणी है, जिसने गत कुछ वर्षों में, सीखने के तरीके को, जो अब बहुत अच्छी तरह से स्थापित हो चुका है, प्रेमपूर्वक पोषित करने तथा प्रभावशाली ढंग से लागू करने के लिए, इतना कुछ, इतनी लगन से किया है।

48. पूर्ववर्ती योजनाओं की भाँति, आने वाली योजना के आवश्यक तत्व बिल्कुल स्पष्ट हैं। तथापि, परिष्कृत क्रियाकलापों के ढाँचे, जिनसे एक क्लस्टर विकास करता है, की सराहना इसके विभिन्न पक्षों की गहन समझ के लिए आवश्यक है। हम आपकी संस्था पर भरोसा करते हैं कि जो सम्बद्ध मार्गदर्शन से इतनी परिचित है कि सामान्यतया मित्र, तथा विशेषकर संस्थाएँ तथा उनकी एजेंसियाँ, आप पर निर्भर हो सकते हैं कि प्रासंगिक सोच-विचार पर उनका ध्यान आकर्षित कर, उनके विचार-विमर्श को स्पष्ट करें।

हालाँकि, स्पष्ट रूप से, कम से कम 5000 क्लस्टरों में जहाँ कार्य के प्रतिमान को सघन किया जा रहा है, मित्रों की मदद की आवश्यकता, एक तो आपके स्वयं के काम करने के तरीके के आशय-किन्तु विशेषकर सहायक मण्डल सदस्यों के लिये-बड़ी चुनौती होगी। वे क्लस्टर जो उनके क्षेत्रों में, अपनी विकास प्रक्रिया की प्रथम पंक्ति में हैं, निश्चित ही, उनके समय के बड़े भाग की मांग करेंगे; साथ ही, क्षेत्रीय स्तर पर प्रशासनिक व्यवस्थाओं को भी अधिक बार उनकी मदद की आवश्यकता पड़ेगी। समुदाय में जो होता है उसमें अधिकतर से वे सम्बन्धित रहते हैं; शैक्षणिक प्रक्रिया के प्रत्येक स्तर पर विकास तथा गतिविधियों के चक्रों को सशक्त करने, दोनों के प्रति ध्यान रखकर, वे विभिन्न क्रियाओं के मध्य, जिन्हें समुदाय में बढ़ावा दिया जा रहा है, सामंजस्यता को प्रेरित करते हैं, तथा शिक्षण के आवेग को हवा देकर ज्वाला बना देते हैं। सीखने को बढ़ावा देने तथा मित्रों को सेवा के क्षेत्र में प्रवेश कराने में मदद की अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने के लिये, प्रशिक्षण संस्थान से, जिसके कार्यों के दृष्टिकोण, उनसे निकटता से मिलते हैं, वह बहुत कुछ प्राप्त करते हैं, परन्तु उनके अन्य कर्तव्य भी बराबरी की मांग करते हैं। अतः उन्हें सोचने की आवश्यकता होगी कि उनकी उन वृहद जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिये वे किस प्रकार अपने सहायकों से और अधिक बड़े पैमाने पर तथा सृजनात्मक रूप से मदद प्राप्त कर सकते हैं। सहायकों को, निसंदेह, किसी भी प्रकार का कार्य दिया जा सकता है -- सरल अथवा जटिल, सामान्य अथवा अति विशिष्ट -- तथा यह बहुमुखी प्रतिभा एक विशिष्ट शक्ति को संस्थापित करती है। जहाँ कुछ सहायक स्थानीय समुदाय के विकास में व्यस्त हो सकते हैं, अन्य को एक पूरे क्लस्टर का उत्तरदायित्व दिया जा सकता है। उनका ठीक से उन्मुखकरण कर, क्षमता विस्तार के साथ मार्गदर्शन कर, तथा धीरे-धीरे उनके कर्तव्यों को बढ़ाकर, 'सहायक मण्डल' सदस्य, विद्यमान सम्भावनाओं से और अधिक लाभ उठा सकेंगे। परिणामस्वरूप निश्चित ही और भी बहुत कुछ सीखना है, और आपको प्रोत्साहित किया जाता है कि अपने सहायकों के अनुभव से अन्तर्दृष्टि प्राप्त करें।

विशेष सामर्थ्य का काल

49. योजना का अपने सभी पक्षों में प्रणालीबद्ध अनुसरण, एक सामूहिक प्रयत्न के प्रतिमान को बढ़ावा देता है जो न केवल सेवा के प्रति प्रतिबद्धता, बल्कि उपासना के प्रति इसके आकर्षण के कारण भी विशिष्टता प्राप्त करता है। अगले पाँच वर्षों में गतिविधियों की जिस सघनता की आवश्यकता है वह भक्ति के उस जीवन को और समृद्ध बनायेगी जो, पूरे विश्व में, क्लस्टर में साथ-साथ सेवा दे रहे साझा करते हैं। समृद्धि की यह प्रक्रिया

पहले से ही काफी विकसित है: उदाहरण के लिये, देखें, किस प्रकार उपासना के लिए बैठकें सामुदायिक जीवन के मूल में गूंथ दी गई हैं। भक्तिपरक बैठकें वे अवसर हैं जहाँ कोई भी आत्मा प्रवेश कर सकती है, स्वर्गिक सुगंधों की सांस ले सकती है, प्रार्थना की मधुरता का अनुभव कर सकती है, 'सृजनात्मक शब्द' पर चिंतन कर सकती है, चेतना के पंखों पर उड़ सकती है, अपने 'प्रियतम' से संवाद कर सकती है। भाईचारा तथा साझे उद्देश्य की भावनाएँ उत्पन्न होती हैं, विशेषकर आध्यात्मिक उच्च वार्तालाप में, जो स्वाभाविक रूप से ऐसे समय उत्पन्न होते हैं और जिनके द्वारा "मानव हृदय रूपी नगर" खोले जा सकते हैं। किसी भी स्थान पर उपासना सभा का आयोजन कर, जिसमें किसी भी पृष्ठभूमि के वयस्कों तथा बच्चों का स्वागत है, मशरिकुल-अज़कार की चेतना उत्पन्न हो जाती है। एक समुदाय में भक्तिपरक चरित्र का बढ़ावा, 'उन्नीस दिवसीय सहभोज' पर भी प्रभाव डालता है तथा अन्य अवसरों पर जब मित्र एक साथ एकत्र होते हैं अनुभव किया जा सकता है।

50. इस सम्बन्ध में 'पवित्र दिवस' के आयोजन विशेष स्थान रखते हैं। 'पातियों' का सस्वर पाठ तथा प्रार्थनाओं, कहानियों, गीतों तथा भावनाओं को दी गई आवाज -- ये सभी पवित्र 'विभूतियों' के लिये व्यक्त प्रेम है, 'जिनके' जीवन व उद्देश्यों को याद किया जाता है -- हृदय को ओज से तथा आत्मा को आदर तथा आश्चर्य से भर देते हैं। शीघ्र प्रारम्भ होने वाली पाँच वर्षीय योजना के दौरान इस प्रकार के दो महान अवसर आएँगे: बहाउल्लाह तथा बाब के 'जन्मदिवस' की दूसरी शताब्दी क्रमशः 2017 व 2019 में। यह महिमाशाली 'पर्व' प्रत्येक भूमि के बहाईयों के लिये अवसर होंगे सर्वाधिक सम्भव संख्या में अनुयायियों, उनके परिवारों, मित्रों तथा सहभागियों, तथा वृहद समाज के अन्य जनों को आकर्षित करने के, उन क्षणों को मनाने के लिये जब सृष्टि में उस अद्वितीय 'अस्तित्व', 'ईश्वर के प्रकटरूप' का, विश्व में जन्म हुआ था। इन द्विशताब्दियों के समारोह से निश्चित ही इस सराहना को बढ़ावा मिलेगा कि अब उस कैलेण्डर के अनुसार जो सभी जगह ईश्वर के मित्रों को एकता के सूत्र में बांधता है, किस प्रकार इन 'पवित्र दिवसों' को मनाना, 'बहाई' पहचान सुदृढ़ करता है।

51. आने वाले कुछ वर्षों में वस्तुतः, समुदाय अनेक वार्षिकोत्सव मनायेगा जिसका क्रम नवम्बर 2021 में अब्दुल-बहा के 'स्वर्गारोहण' की 'शताब्दी' के साथ समाप्त होगा, जो 'रचनात्मक युग' की पहली शताब्दी को पूर्ण करेगा। अगले वर्ष बहाई विश्व, 'मास्टर' की कलम से निकली 'दिव्य योजना की पातियों' में से पहली पाती के, सौवें वर्ष को मनायेगा। इन चौदह पातियों में, जो मानवता के अंधकारतम कालों में से एक में लिखी गई थीं,

अब्दुल-बहा ने शिक्षण कार्यों के लिये ऐसा अधिकार-पत्र तैयार किया जिसके कार्यों के लिये पूरा विश्व एक मंच था। 1937 तक क्षणिक विराम देकर, जब धर्मसंरक्षक के प्रोत्साहन पर अपने क्रम की पहली योजना, उत्तरी अमेरिका के बहाईयों को सौंपी गई, तब से दिव्य योजना दशकों से अनावृत होती रही है, जैसे-जैसे बहाउल्लाह के अनुयायियों की सामूहिक क्षमता बढ़ती रही है, उनको और अधिक बड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए योग्य बनाती रही है। कितनी आश्चर्यजनक थी 'योजना के लेखक' की परिकल्पना! मित्रों के समक्ष उस दिन की कल्पना रखना जब 'उनके पिता के प्रकटीकरण' का प्रकाश विश्व के प्रत्येक कोने को प्रकाशित कर देगा, 'उन्होंने' न सिर्फ इस साहसिक कार्य को प्राप्त करने के लिये कार्यनीतियाँ बल्कि मार्गदर्शक सिद्धान्त तथा अपरिवर्तनीय आध्यात्मिक आवश्यकताएँ भी बताईं। मित्रों द्वारा दैवीय शिक्षाओं को प्रणालीबद्ध प्रसारित करने का प्रत्येक प्रयास अपना उद्गम दिव्य योजना द्वारा गति में लाई गई शक्तियों में पाता है।

52. आने वाला वैश्विक प्रयत्न जिसके लिए मित्रों का आह्वान किया जायेगा, सिद्ध कार्यनीतियों, प्रणालीबद्ध कार्यों, संसूचित विश्लेषण, तथा पैनी अन्तर्दृष्टियों को लागू करने की मांग करता है। तथापि इन सबसे ऊपर यह एक आध्यात्मिक उद्यम है, तथा इसके वास्तविक चरित्र को कभी धुंधलाया नहीं जाना चाहिये। विश्व की निराशाजनक हालत शीघ्रता से कार्य करने को विवश करती है। वह सब जो बहाउल्लाह के अनुयायियों ने पिछले बीस वर्षों में सीखा है अवश्य ही अगले पाँच वर्षों की प्राप्तियों में बदलना चाहिये। जो कुछ उनसे मांगा जा रहा है, उसकी मात्रा 'उनकी पातियों' में से एक की याद दिलाती है जिसमें 'वे' उस चुनौती को जो 'उनके धर्म' को फैलाने में आयेगी, असाधारण शब्दों में व्यक्त करते हैं:

    कितनी ही भूमि अजोती तथा अकृषित पड़ी है; और कितनी ही भूमि जुती तथा कृषित है, पर फिर भी बगैर जल के है; और कितनी ही भूमि जब फसल काटने का समय आया तो कोई भी काटने वाला इसके लिए सामने नहीं आया ! तथापि, ईश्वर की कृपा दृष्टि के चमत्कार से तथा 'उनकी' प्रेमपूर्ण दयालुता के प्रकटीकरण से, 'हम' आशा करते हैं कि वे आत्माएँ प्रकट हों, जो स्वर्गिक गुणों की मूर्तरूप हैं, तथा स्वयं को 'ईश्वर के धर्म' का शिक्षण करने तथा पृथ्वी पर विचरण करने वाले सभी के प्रशिक्षण में स्वयं को व्यस्त करेंगी।

53. 'उनके' प्रियजनों के पूरे विश्व में प्रणालीबद्ध प्रयास 'आशीर्वादित परिपूर्णता' द्वारा इस प्रकार व्यक्त की गई आशा को पूर्ण करने का लक्ष्य रखते हैं। 'वे' स्वयं उन्हें प्रत्येक मोड़ पर प्रबलित करे।

-विश्व न्याय मंदिर